अनेकान्त तीसरा नेत्र

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

अनेकान्त का अर्थ है– अनेक धर्मों वाला। किसी वस्तु में अनेक गुण धर्म एक साथ रहते हैं। अनेकान्वाद एक ऐसा सिद्धान्त है जो सत्य का मार्ग दिखलाता है। सत्यांश को पूर्ण सत्य नहीं कहा जा सकता। यह ही सत्य है यह कहना ठीक नहीं है। यह भी सत्य है यह कहना उचित है। अनेकान्त सभी विचारधाराओं, सभी धर्मों और सभी सम्प्रदायों को महत्व देता है। आग्रह और दुराग्रह के लिए अनेकान्त में कोई स्थान नहीं है। अनेकान्त सभी को जोड़ने में विश्वास करता है तोड़ने में नहीं। सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास अनेकान्त है। अनेकान्त को आगे बढ़ाने के लिए स्याद्वाद है। स्याद्वाद सापेक्षता का सिद्धान्त है। सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना इस सिद्धान्त में समाहित है।

सामान्यतः व्यक्ति की दो आंखें होती है। तीसरे नेत्र की बात कहां से आई? तीसरा नेत्र भीतर का नेत्र है– वह है अनेकान्त। अनेकान्त शब्द अनेक और अन्त दो शब्दों से मिलकर बना है। अनेक का अर्थ होता है–एक से अधिक। एक से अधिक दो भी हो सकते हैं और अनन्त भी। दो और अनन्त के बीच में अनेक कार्य संभव हैं तथा अन्त का अर्थ धर्म अर्थात् गुण है। प्रत्येक वस्तु में अनन्त गुण विद्यमान हैं, अतः जहाँ अनेक का अर्थ अनन्त होगा, वहाँ अन्त का अर्थ गुण लेना चाहिए। इस कथन के अनुसार अर्थ होगा अनन्तगुणात्मक वस्तु ही अनेकान्त है, किन्तु जहाँ अनेक का अर्थ दो लिया जायेगा, वहाँ अन्त का अर्थ धर्म होगा तब यह कहा जायेगा कि परस्पर विरुद्ध प्रतीत होने वाले दो धर्मों का एक ही वस्तु में होना अनेकान्त है।

जात्यन्तरभाव को अनेकान्त कहते हैं अर्थात् अनेक धर्मों या स्वादों के एक रसात्मक मिश्रण से जो जात्यन्तरपना या स्वाद उत्पन्न होता है, वही अनेकान्त शब्द का वाच्य है। जो तत् है वही अतत् है, जो एक है वही अनेक है, जो सत् है वही असत् है, जो नित्य है वही अनित्य है। इस प्रकार एक वस्तु में वस्तुत्व की उपजाने वाली परस्पर विरुद्ध दो शक्तियों का प्रकाशित

होना अनेकान्त है। वस्तु का स्वरूप अनेकान्तात्मक है। प्रत्येक वस्तु अनेक गुण–धर्मों से युक्त है। अनन्त धर्मात्मक वस्तु ही अनेकान्त है।

वस्तु का स्वरूप अनेकान्तात्मक है। वही वस्तु है और वही वस्तु नहीं है, वही वस्तु नित्य है और वही वस्तु अनित्य है, इस प्रकार अनेकान्त का प्ररूपण छल मात्र है। अनेकान्त छल रूप नहीं है, क्योंकि जहाँ वक्ता के अभिप्राय से भिन्न अर्थ की कल्पना करके वचन विघात लिया जाता है, वहाँ छल होता है। जो वस्तु जैसी है, उसको उसी अनुरूप उसी अभिप्रायपूर्वक कहने से छल का ग्रहण नहीं होता है। जो वस्तु तत् है वही अतत् है, जो एक है वही अनेक है, जो सत् है वही असत् है, जो नित्य है वह अनित्य है। इस प्रकार एक वस्तु में वस्तुत्व की उत्पादक परस्पर विरुद्ध दो शक्तियों का प्रकाशित होना अनेकान्त है। अनेकान्तवाद संशयवाद नहीं है।

सभी धर्मों की सत्ता अपनी–अपनी निश्चित अपेक्षाओं से स्वीकृत है। तत्तद् धर्मों का विशेष प्रतिभास निर्विवाद सापेक्ष रीति से बताया गया है। जैसे एक ही देवदत्त भिन्न–भिन्न पुत्राादि संबंधियों की दृष्टि से पिता, पुत्र, मामा आदि धर्मों का एक वस्तु में रहने में कोई विरोध नहीं है। देवदत्त यदि अपने पुत्र की अपेक्षा पिता है तो सबकी अपेक्षा पिता नहीं हो सकता। जैसेकि एक ही हेतु सपक्ष में सत् होता है और विपक्ष में असत् होता है, उसी तरह विभिन्न अपेक्षाओं से अस्तित्व आदि धर्मों के रहने में भी कोई विरोध नहीं है। वस्तु अनन्त धर्मात्मक है एवं प्रत्येक वस्तु किसी–न–किसी अपेक्षा से सत्य है। भेद ज्ञान से अनेक और अभेद ज्ञान से एक है। ऐसा भेदाभेद ग्राहक ज्ञान ही सत्य है।

जो लोग इनमें से एक को सत्य मानकर दूसरे में उपचार का व्यवहार करते हैं वह मिथ्या है, क्योंकि दोनों धर्मों में से एक का अभाव मानने पर दूसरे का भी अभाव हो जाता है। दोनों का अभाव हो जाने पर वस्तुतत्त्व अनुपाख्य अर्थात् निःस्वभाव हो जाता है। यदि वस्तु सर्वथा नित्य हो तो वह उदय अस्त को प्राप्त नहीं हो सकती और न उसमें क्रियाकारक की ही योजना बन सकती है। जो सर्वथा असत् है उसका कभी जन्म नहीं होता और जो सत् है उसका कभी नाश नहीं होता। दीपक भी बुझने पर सर्वथा नाश को प्राप्त नहीं होता किन्तु अंधकार रूप

पर्याय को धारण किये हुए अपना अस्तित्व रखता है। वास्तव में विधि और निषेध दोनों कथंचित् इष्ट हैं।

विवक्षावश उनमें मुख्यगौण की व्यवस्था होती है। अनेकान्त जैनदर्शन का हृदय है। सकल जैन साहित्य अनेकान्त के रूप में कथित है। अनेकान्त स्याद्वाद को समझे बिना जैनदर्शन को समझ पाना तो दुष्कर है, उसमें प्रवेश पाना भी कठिन है। अनेकान्त दृष्टि एक ऐसी दृष्टि है, जो वस्तुतत्त्व को उसके समग्र स्वरूप के साथ प्रस्तुत करती है। जैन दर्शन के अनुसार वस्तु बहुआयामी है। वस्तु में परस्पर विरोधी अनेक गुणधर्म व्याप्त हैं। एकान्त दृष्टि से वस्तु का समग्र बोध नहीं कर सकते हैं। वस्तुतत्त्व के समग्र बोध के लिए समग्र दृष्टि अपनाने की जरूरत है और वह अनेकान्त दृष्टि अपनाने पर ही संभव है।